

Janam Diwas Puja - Prem Tattwa

Date : 21st March 1995
Place : Delhi
Type : Puja
Speech : Hindi & English
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 06
English	07 - 08
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

अपने ही जन्मदिन में क्या कहा जाए? जो उम्मीद नहीं थी वो घटित हो गया है। आप इतने लोग आज सहजयोग में दिल्ली में बैठे हुए हैं, इससे बढ़कर एक माँ के लिए और कौन सा जन्म दिन हो सकता है? आप लोगों ने आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त किया है, ये भी आप का जन्मदिन है। एक महान कार्य के लिए आप लोग तैयार हुए हैं। ये महान कार्य आज तक हुआ नहीं। उसके आप संचालक हैं। इससे बढ़कर और मेरे लिए क्या सुख का साधन हो सकता है? कभी सोचा भी नहीं था कि अपने जीवन में ही इतने आत्मसाक्षात्कारी जीवों के दर्शन होंगे और इतना अगम्य आनन्द उठाने को मिलेगा।

एक वातावरण की विशेषता कहिए जिसमें कि आज मनुष्य एक ध्राति में घूम रहा है। एक तरफ विदेश की तरफ नजर करने पर ये समझ में आता है कि ये लोग एकदम ही भटक गए हैं। वहाँ पर नैतिकता का कोई अर्थ ही नहीं रहा। अनीति के ही रास्ते पर चलना, अग्रसर होना वो बड़ी बहादुरी की चीज समझते हैं और सीधे नरक की ओर उनकी गति है। इस गतिमान प्रवृत्ति को रोकना बड़ा ही कठिन काम है, लेकिन वहाँ भी ऐसे अनेक हीरे थे जिन्होंने सोचा कि बाहर आएँ।

दूसरी तरफ देखने पर हमें पता चलता है कि मनुष्य के लिए घुरी तरह से कठिन परिस्थितियाँ बनाई गई हैं कि आप अपने जीवन को एक कठिन बंधन में बाँध ले कि हम धार्मिक हैं और अगर आप धर्म नहीं करेंगे तो आपके हाथ काट देंगे, आपको आँख निकाल देंगे, आपको जमीन में गाड़ देंगे। ये अतिशयता हो गई और इसके साथ-साथ दूसरी तरफ जैसे मैंने बताया बहकाव की भी अतिशयता है। दोनों तरफ अतिशयता है। आपको समाधान करना चाहिए कि आप इस भारतवर्ष में उत्पन्न हुए, इसकी संस्कृति जो है वो संतुलित है। हमें इतना बताया नहीं गया है धर्म के बारे में। किसी ने खास चर्चा भी नहीं करी। लेकिन अधिकतर हिन्दुस्तानी अधर्म में नहीं उतरते। ये दूसरी बात है उसके पास अगर पैसा आ जाए बहुत, उसका दिमाग खराब हो जाए या वो राजकारण में चला जाए या और कोई इसी तरह की चीज को प्राप्त कर ले तो हो सकता है कि उसको ये बहकावा मिल जाए।

पर उसमें भी खुले आम कोई गलत काम करने की हिम्मत नहीं क्योंकि समाज इतना जबरदस्त है कि उसे खींच लेगा। इसलिए जो बात मैं आज आपको बताने वाली हूँ वो ये है कि एक अपने देश की संस्कृति इतनी ऊँची जो अब भी मानी जाती है और अब भी अपने यहाँ लोग नैतिकता का स्तर मानते हैं। ऐसे देश में विचार करना चाहिए कि यहाँ किसने इतना अधिक कार्य किया। ये कार्य स्त्रियों ने किया। भारतीय स्त्री की शक्ति ने और इस शक्ति के सहारे उसने अपने बाल-बच्चे, अड़ोस-पड़ोस और सारे समाज की भी धर्म पर स्थापना की। हालाँकि अब विदेशी संस्कृति का असर आ रहा है और उससे हो सकता है कि हम लोग भी थोड़े बहुत प्लावित हो सकते हैं। पर अतिशयता में जाना बड़ी कठिन बात है क्योंकि हम लोग जकड़े हुए हैं अपने देश की परम्पराओं में। अपना देश इतना सौभाग्यशाली है कि यहाँ पर एक से एक महात्मा हो गए इतने सन्त हो गए, इतने यहाँ पर अवतरण हुए, हिन्दू धर्म में ही नहीं मुसलमानों में भी और आप जानते हैं सिखों में बड़े-बड़े धर्मात्मा इस देश में आए। इस देश की जो विशेषता है कि इस भूमि में ही जैसे आध्यात्म फँसा हुआ है। न जाने कैसे लोग अध्यात्म की ओर चलते हैं और मानते हैं।

सहजयोग की प्रणाली में हम लोग संतुलन में खड़े हैं। मतलब भारतीय संस्कृति में जो गंदगियाँ हैं उसे तो बिल्कुल निकाल ही देना पड़ेगा और निकल जाती हैं। सहजयोग में आने के बाद बहुत से लोग इस चीज़ को छोड़ देते हैं। लेकिन अब भी मैं देखती हूँ कि कुछ न कुछ चीज़ों से बंधे हुए सहजयोगी हैं और इसका कारण है कि इतने दिनों से जो चीज़ें चली आई हैं और मान्यता रही उसके प्रति एकदम उदासीन हो जाना उन्हें कठिन लगता है।

विशेषकर अब हम लोग उत्तर हिन्दुस्तान में बैठे हुए हैं। मैं देखती हूँ उत्तर हिन्दुस्तान में या तो मुसलमानों के परिणामस्वरूप हो, चाहे जैसा भी हो औरतों की दशा बहुत खराब है। औरतों को बहुत छला जाता है, सताया जाता है। शक्तिस्वरूप औरत का कोई मान नहीं है। कहा जाता है यत्र नार्याः पूज्यन्ते, तत्र रमन्ते देवता। कहा जाता है जहाँ स्त्री पूजनीय हो और उसकी पूजा की जाती हो वहीं देवता रमण करते

हैं। इसका मतलब यह नहीं कि औरतों का ही राज हो या वो किसी तरह से आततायी हों। इसका मतलब यह है कि स्त्री पहले पूजनीय होनी चाहिए, उसके अन्दर पूजनीय गुण होने चाहिए। वो अगर पति का अपमान करती है और अपने बच्चों की तरफ ध्यान नहीं देती और भी गलत-सलत काम करती हो तो वो स्त्री तो पूजनीय हो नहीं सकती और वही स्त्री पूजनीय होती है जो अत्यन्त प्रेममयी हो। जिस औरत में प्रेम का सागर बसा हो, लोग उसी को पूजते हैं, और जो नहीं है उसके सामने तो चाहे न कहें कोई कुछ, पर पीठ पीछे उसकी बुराई करते हैं।

हमारे यहां स्त्री को शक्ति माना जाता है, पर शक्ति जैसे ये आप इतने यहां पर बिजली का प्रदर्शन देख रहे हैं, ये स्वयं शक्ति नहीं, शक्ति तो कहीं और से आ रही है और इसका यहां प्रदर्शन मात्र है। तो इसी तरह स्त्री एक शक्ति स्वरूप होती है, पर इसका प्रादुर्भाव जो है वो बाह्य में पुरुष के रूप में होता है। उसके बच्चे, उसकी रिश्तेदारी के लोग, उसके पति, उसके ससुर, ये सब पुरुष उस स्त्री की शक्ति से प्लावित होते हैं और उस प्रेम की शक्ति से प्लावित होने के बाद उनमें भी एक तरह का बड़ा अनुठा सा संतुलन बन जाता है। पर जहां पर ये स्थिति नहीं होती, जहां पर घर की माँ और घर की स्त्री और रिश्तेदार इन औरतों में उस प्रेम का प्रदर्शन नहीं होता है, उल्टे क्रोध आदि षडरिपुओं से अगर वो भरी रहती हैं तो ऐसे घरों में कभी भी प्रेम या आनन्द आ ही नहीं सकता। ये स्त्री का ही एक बड़ा भारी कार्य है। उसमें हम दबे जा रहे हैं। ये क्या शक्ति है जो सोचती है कि मैं दबे जा रही हूँ। वो तो ये सोचती है, कि ये प्रकाश देना मेरा कर्तव्य है और उसे मैं कर रही हूँ। खुशी-खुशी सारा काम करती है। इस समझ का आना जरूरी है हालांकि औरतों को इतना दबाया गया है, इस समझ के कारण इतनी उनकी अवहेलना करी है। एक दूसरी चीज खड़ी हो रही है जो कहती है समाज में कि ये औरतों पर दबाव हम चलने नहीं देंगे। हम पुरुषों को ठिकाने लगा देंगे। उनसे हम हर चीज में लड़ेंगे। उनको हम बिल्कुल बेकार कर देंगे। ये सब करके देख लिया और देशों में। जहाँ-जहाँ ये हो रहा है वहाँ के बच्चों का हाल देख लीजिए और वहाँ की सब चीजों का हाल देख लीजिए। अब समझें इसमें क्या है कि मनुष्यों में ये समझ आनी चाहिए। मनुष्य में ये समझ सिर्फ स्त्रियों में ही नहीं पुरुषों में भी आनी चाहिए। ये पुरुषों को सोच लेना चाहिए कि हमारी स्त्री जो है ये स्वयं साक्षात् लक्ष्मी स्वरूप है और इसका मान हमें रखना चाहिए।

पहले तो स्त्री भी पुरुष का मान रखें और पुरुष भी स्त्री का मान रखें। मैं देखती हूँ कि सहजयोग में अब बहुत कुछ ठीक हो गया लेकिन हम लोग जब शादियां करते हैं, सहजयोग में, तो जिन लड़कियों की शादियां इंग्लैंड-अमेरिका में हुईं उनका दिमाग खराब हो जाता है, सबका नहीं, और उल्टी बात ये है कि जिन लड़कियों की शादियां हिन्दुस्तान में होती हैं वो तो कहती हैं कि भगवान बचाए रखे बाबा! सास, ससुर, ये वो, मार झंझट। सब लोग तो मारने को दौड़ते हैं। कहने का मतलब ये कि संतुलन न तो वहाँ है न यहाँ। ये संतुलन स्थापित करने के लिए सहजयोगियों को समझ लेना चाहिए। इसका मतलब ये नहीं कि कोई पति को अपने सिर पर बैठा ले, या कोई पत्नी को सिर पर बैठा ले।

इसका मतलब है कि प्रत्येक का एक मूल्यांकन होना चाहिए। सबको Valuation करने के बाद आप समझ सकते हैं कि कहाँ तक आप संतुलन में हैं। आप दूसरों की बात मत सोचिए, अपनी बात सोचिए। जहाँ आपको जो कहना है वो कहना ही होगा और जो कुछ आपको सुनना है वो सुनना ही होगा। मैं देखती हूँ कि सहज योग में हमने पहले शुरुआत कुटुम्ब से की। कुटुम्ब व्यवस्था से सहजयोग को धीरे-धीरे बाँधा है और जब कुटुम्ब ठीक हो गए फिर उसके बाद हमने एक-एक चीज पर कदम रखा है। आज आपको पता है कि ये पच्चीसवाँ सहस्त्रार इस बार मनाया जाएगा। 25 साल हो गए जब सहस्त्रार खुला था, तब से लोगों ने इस चीज को प्राप्त किया और प्राप्त करके इससे बड़े प्लावित हुए, पुष्ट (nourish) हुए। आज इस स्थिति में आ गए। अब हमारे लिए आगे क्या कर्तव्य है?

कुटुम्ब से शुरुआत करें तो कुटुम्ब में हमें शांति प्रस्थापित करनी चाहिए। पहली चीज है शांति। जहाँ शांति नहीं होगी कोई चीज वहाँ पनप नहीं सकती। समझ लीजिए यहाँ गमलें रखे हैं और ये सब हिलने लग जाएं, तो ये बढ़ेंगे? खत्म हो जाएंगे। तो सबसे पहली चीज हमें शांति प्रस्थापित करनी चाहिए। इसमें आदमी को भी मान देना चाहिए और औरतों को भी समझ रखनी चाहिए। दोनों जगह ये चीज रखने से पहले घर में शांति होने से अपने बच्चे जो हैं वो सुरक्षित रहें और उनके अंदर अपने प्रति, स्वयं के प्रति एक जागरूकता आएगी और वे समझ लेंगे कि वो भी सहजयोगी हैं और माँ-बाप भी सहजयोगी हैं। उनका परमकर्तव्य होता है कि वे अपने माँ-बाप का नाम और भी उज्ज्वलित करें।

अब मैं देखती हूँ कि सहजयोग बढ़ते-बढ़ते एक समाज में तो आ ही गया है किंतु और भी क्षेत्रों में बढ़ रहा है। मानों अब हम लोग जैसे कोई मद्रास से आया है, कोई महाराष्ट्र से आया है, कोई कहीं से आए हैं, तो इस तरह से विचार करते हुए सहजयोग बढ़ रहा है। अब इसमें भी इसी तरह का होता है जैसे दिल्ली वाले आए तो उन्होंने कहा माँ आपका जन्मदिन दिल्ली में होना चाहिए। अच्छा भाई कर देंगे। वो तो मानना ही पड़ेगा, दिल्ली वालों को कौन मना कर सकता है? यहाँ पर जन्मदिन न हो। बाप रे बाप! हो गया फिर मेरा! तो मैंने कहा भाई शांतिपूर्वक यह चीज़ ठीक है, दिल्ली में ही करो वो अच्छा रहेगा, और व्यवस्था भी यहाँ अच्छी होती है। सब लोगो का इन्तज़ाम भी अच्छा होता है। सब दृष्टि से मैंने कहा ठीक है। लेकिन उसमें हम दिल्ली वाले हैं बम्बई वाले हैं ऐसा लेकर लोग झगड़ा शुरू कर देते हैं। अब यह तो बड़ी ही संकुचित प्रवृत्ति है। मतलब जो सहजयोग का सामूहिक स्वरूप है उसे समझने में हमने गलती की। सामूहिकता में अगर आप नहीं उतरेंगे तो आपका जो संतुलन है वो डाँवाडोल हो जाएगा।

अगर हम कहें कि इस बार बम्बई में ही हो जाए जन्मदिन। क्या है कहीं भी हो जाए, जन्मदिन तो होगा ही। हमारी तो उम्र बढ़ने ही वाली है। आप चाहे कहीं भी करिए। लेकिन इसमें भी उलझन हो जाएगी। भई इस बार माँ ने ऐसा क्यों किया। या तो लोग कहेंगे कि हमसे कोई गलती हो गई और ये कहेंगे कि माँ आपने ऐसा क्यों किया है, दिल्ली वालों के यहाँ इतनी बार किया था, इस बार क्यों नहीं कर रहे दिल्ली वालों के यहाँ। तो ये जो हमारा तदात्म्य गलत चीज़ों से है कि हम यहाँ के रहने वाले हैं, हम वहाँ के रहने वाले हैं। पहले तो यहाँ तक होता था कि एक गली में रहने वालों में भी झगड़ा होता था, अब वो खत्म हो गया है। फिर अलग-अलग मोहल्लों में रहने वालों में भी झगड़ा होता था और हरेक मोहल्ले में रहने वालों में बड़ा झगड़ा होता था और हरेक मोहल्लों के लोग अलग-अलग बैठकर, मैं देखा करती थी। अरे बाप रे, अभी भी चल ही रहा है मामला। फिर वे मोहल्ले छूटे, हर जगह। अब भाषा पर भी थोड़ा बहुत आ गए। भाषा पर भी ये वो भाषा बोलता है, वो दूसरी भाषा बोलता है।

सबसे अच्छी बात यह है कि हमारे देश की जो भाषा है वह सीख लेनी चाहिए। चाहे आप हिन्दू हों, मुसलमान हों, मराठी हों चाहे अंग्रेज़ हों, चाहे कुछ हों, पहले आपको

हिन्दी भाषा आनी चाहिए सहजयोग में। मैं चौदह आपकी Official मान्यता प्राप्त भाषाओं में कैसे बोल सकती हूँ और आप से वार्तालाप कर सकती हूँ। तो जो भाषा माँ को आती है, हिन्दी मेरे समझ में आती है। हिन्दी मैंने कभी पढ़ी नहीं, कभी हिन्दी मैंने सीखी नहीं, पर हिन्दी भाषा का हमेशा मुझे बड़ा मान रहा और इसलिए हिन्दी भाषा मुझे आती है। इसलिए आप लोग सब अगर हिन्दी भाषा सीख लें तो सहजयोग पर बड़ी मेहरबानी हो जाएगी और इससे आप लोगों का भी बड़ा लाभ हो जाएगा। बहुत से लोग हिन्दी सीख गए। मेरे टेप सुनकर बाहर परदेस के लोग जो हैं वो बड़े जोर से चिपक जाते हैं किसी चीज़ पर। वो लोग हिन्दी बोलने लग गए और हमारे यहाँ अब भी बहुत से लोग हैं जो ये कहते हैं कि माँ हिन्दी में भाषण मत दो। आपको चाहिए तो तमिल में दो या तेलुगु में दो। मुझे नहीं आती, न तमिल न तेलुगु। मैं क्या करूँ, इसलिए ये जो भी हमारे अन्दर भेद हैं इनको बिल्कुल खत्म कर देना चाहिए। जातीयता के भेद तो हैं ही हमारे अन्दर बसे हुए। एक साहब मुझे कहने लगे हाँगाँ में कि हिन्दुस्तान में जातीयता बहुत है अब भी। अब भी सहजयोगियों में जातीयता है। वो ब्राह्मण हैं साहब। मैंने कहा अच्छा बताइये कि क्या आप किसी हरिजन से शादी करेंगे। घबरा गये हरिजन से! अरे भई हरि के जन हैं उनसे शादी करने में क्या? हरिजन से नहीं कर सकते। तो पहले बाकी सब लोगों में हो जाये, फिर धीरे-धीरे हरिजन को भी मान लें। लेकिन परदेश में ये झगड़ा ही नहीं। कितनी हरिजन लड़कियों की शादियाँ मैंने बाहर करवा दीं और लड़कों की भी। उनको पता ही नहीं जाति-पाति करके कोई चीज़ भी होती है, कोई हरिजन होता है। इस प्रकार हमारे अंदर इतनी भिन्नता का स्वभाव है हम भिन्न हैं, वो भिन्न हैं। अब भिन्नता भी आवश्यक चीज़ है। परमात्मा ने हरेक को भिन्न-भिन्न बनाया। हरेक को शक्ति अगर एक बनाते तो कोई भी किसी को पहचान नहीं पाता। जैसे कोई आपने फौज खड़ी कर दी, ऐसे सबकी शक्ति हो जाती। तो भगवान ने ऐसी सृष्टि की कि एक पत्ता दूसरे से नहीं मिलता। ऐसे पत्ता बनाया है कि ये पत्ता कहीं आप दुनिया में जाकर दूढ़े तो बिल्कुल ऐसा नहीं हो सकता बताइये! ये उसकी कमाल है! पर गर ये सोचने लग जाए कि भिन्नता ही हमारी विशेषता है तो फिर आप पत्ते के ही स्तर पर हैं उससे आप उठे ही नहीं। उससे उठकर देखिये तो आप समझ जायेंगे कि आप जो हैं वो एक विशेष व्यक्ति, योगीजन, जिनकी कि जाति-पात कुछ भी नहीं। शास्त्रों में लिखा है कि सन्यासी की जाति-पात कुछ भी नहीं। सन्यासी हो गये! अब

क्या रह गया? अंदर से छूट गये सो सन्यासी। तो आपकी जात-पात कैसे रह गई? इसका बड़ा विरोध करना चाहिए। जात-पात का बड़ा विरोध करना चाहिए और सिर्फ गुण ग्राह्यता होनी चाहिए। किसमें क्या गुण हैं, उसको पाना चाहिए। और उसको समझना चाहिए। इस एक मर्यादा से जब हम गुजर जाते हैं तब फिर देश-विदेश से हमारा संबंध आता है। अब मैं आपसे क्या बताऊँ कि परदेश में मैंने जो लोग देखे हैं उनमें बहुत ज्यादा यांत्रिक लोग हैं। यंत्र में विश्वास रखते हैं और साइंस में विश्वास रखते हैं, पढ़े-लिखे हैं। लेकिन सहज में जब वे उतरे, तो जैसे कोई प्रेम सागर में ही उतर गया हो। उसमें डुबकियाँ लगा रहे हैं। अब यहाँ पर आप देखिये कि पाँच सौ आदमी बाहर से आये हैं। कितना नितान्त प्यार है उनका मेरे साथ। क्योंकि वो कहते हैं कि माँ जब हम सोचते हैं कि माँ हमें आपसे प्यार है तो ऐसा लगता है कि चारों तरफ से हमें प्रेम व आनंद के सागर ने घेर लिया हो। कल देखिये उनको कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था, कच्ची पर आनंद की लहरियाँ से वो भरे हुए थे। उनसे सीखने की बात यह है कि बिल्कुल निर्वाण्य, किसी भी तरह की आशा न रखते हुए वो प्रेम में उतरना चाहते हैं। और क्योंकि हम लोगों को भी प्रेम की इतनी महत्ता मालूम नहीं है अब भी हिन्दुस्तानियों की चिट्ठियाँ आयेंगी मेरा बाप बीमार है, मेरे बाप का ससुर बीमार हैं वगैरह वगैरह।

उसको आप दे दीजिये। उसको नौकरी दे दीजिये। मेरा दिवालिया हो गया। मेरा भाई जेल जा रहा है। सब यही बातें यहाँ तक कि वो सोचते हैं कि एक तरह से मेरे ऊपर उनका अधिकार है क्योंकि मैं भी हिन्दुस्तान में पैदा हुई हूँ और आप लोग भी हिन्दुस्तान में। पर ये एक बड़ी निम्न चीज है, इसको मांगने की जरूरत नहीं, अगर आप सहजयोगी हैं ये अपने आप घटित हो सकता है। ये विश्वास परदेसी लोगों का है। अब आपको मैं एक आश्चर्य की बात बताती हूँ। एक औरत संयुक्त राष्ट्र में काम करती थी। एक सहजयोगिनी है वो। अब Mexico में चली गई संयुक्त राष्ट्र में ही। उसका एक लड़का है, उसको ऐसी बीमारी हो गई कि वो बीमारी पुश्त दर पुश्त आती रहती है और इस लड़के पर बड़ी जल्दी आघात हुआ और एक महीने के अंदर वो बच्चा मरने वाला था। इस सहजयोगिनी ने मेरे पास तीन चिट्ठियाँ भेजीं। उसने उस पर नाम लिखकर भेजा कि ये बीमारी है, पता नहीं कौन सी अजीब-गरीब लम्बी-चौड़ी बीमारी उसको है और ऐसी तीन चिट्ठियाँ मेरे पास आईं। मुझे समझ नहीं आया कि उसके लिए क्या कहूँ। इन्सानियत की भाषा में तो कहा नहीं जाता। पर एक तरह से जैसे खिंचाव,

....खिंचाव। और चौथी उसकी चिट्ठी आई कि माँ बड़े आश्चर्य की बात है मेरे लड़के को मैं अस्पताल ले गई थी। तो उन्होंने कहा कि इसके सब ठीक है, बिल्कुल स्वस्थ है पर हिन्दुस्तानियों का ऐसा नहीं। एक बार माँ से हमें मिला दो, अगर माँ मेरे बच्चे को ठीक करेंगी तो वो ठीक होगा। माँ की खोपड़ी पर लादे वगैर वो सोचते ही नहीं कि उनका बच्चा ठीक हो सकता है। कितना बड़ा फर्क है वो मैक्सिको में बैठी हुई, मैं उसका क्या इलाज कर सकती हूँ। मैं बस आपको प्रार्थना कर रही हूँ आपके पास चिट्ठी भेज रही हूँ। ये उसको बीमारी है बस। अब ये श्रद्धा की जो बात है। प्रेम जब श्रद्धामय हो जाता है, श्रद्धामय से अंधश्रद्धा से नहीं। आपको अनुभव है मेरा, आप जानते हैं मुझे, कोई नई बात नहीं। वो अगर श्रद्धामय हो जाये तो कैसे काम बनते हैं। ये समझने वाली बात है। और अगर श्रद्धा सिर्फ यह है कि हम तो माँ को बहुत मानते हैं। ऐसे मानने वाले ईसा को मानने वाले बैठे हैं, मोहम्मद को मानने वाले बैठे हैं, उनको मानो। अरे भई तुम क्या हो? तुम्हारे अन्दर कौन सी विशेषता है। तुमने क्या प्राप्त किया है? इसे सोचना होगा। सो हमने ये देखा कि जो कुछ भी इन लोगों ने इतनी आसानी से प्राप्त किया उसकी वजह ये है कि एक दम प्रेम से शुष्क हो गए। इनके अंदर प्रेम इनको मिला ही नहीं और जैसे ही उनको प्यार मिला एकदम उसकी ओर पूरी तरह से आकर्षित हो गए। और उस प्रेम को पाने के लिए उनको दुनिया की कोई चीज नहीं चाहिए। कोई भी चीज नहीं। अब आते हैं गणपति पुले में हिन्दुस्तानियों की शिकायत बहुत मिलती है। खाना अच्छा नहीं। मद्रासी कहेगा कि मुझे खाना पसंद नहीं, तो लखनऊ वाले कहेंगे साहब क्या खाना बनाते हैं। सबके खाने का शौक, उनकी बीबियाँ ने ऐसे बिगाड़ रखे हैं कि उनको कोई खाना ही पसंद नहीं आता। अब इस हिन्दुस्तान में कौन सा एक खाना बताइये जिसको बनाने से लोग खुश हों। इनको ये पसंद नहीं तो उनको वो पसंद नहीं। पर ये, (बाहर के लोग) कभी नहीं कहेंगे कि खाना अच्छा नहीं, हाँलाकि पहले खाना बहुत खराब होता था। अब जरा बहुत अच्छा हो गया। पर कभी इन लोगों ने ये नहीं कहा कि माँ खाना अच्छा नहीं। अब बाथरूम के लिए भी बड़ी अजीब सी बात है कि हिन्दुस्तानियों ने कहा कि माँ हमको ये भारतीय गुसल नहीं चाहिए। हमको पश्चिमी गुसल चाहिए और पश्चिम वालों ने कहा माँ हमको भारतीय गुसल चाहिए। बड़ी साफ चीज है। अब मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या करें। मैंने कहा अच्छा ठीक है भारत के लोगों को विदेशियों की ओर रख दो और विदेशियों को भारतीयों के स्थान पर रख दो। काम

खत्म। पर हम लोग बड़ी मांगें करते हैं, ये चीज नहीं ठीक वो चीज नहीं ठीक। ये चीज ठीक कर, दो वो चीज ठीक कर दो। कितनों के घर में जुड़े हुए गुसल होंगे। लेकिन इससे हम लोग सोचते हैं कि हम बड़े ऊँचे हो गये इस तरह की मांग करने से और इन लोगों से पूछो तो कहते कि माँ शरीर का तो बहुत आराम उठा लिया। उन्होंने तो बहुत उठा लिया शरीर का आराम। अब आत्मा का आराम दो। शरीर का आराम नहीं चाहिए। जो कि हमने उठाया नहीं वो ही सहजयोग में खोजते हैं कि हमें शरीर का भी आराम मिल जाये। आपसे कहने से तो फिर आप कहेंगे शरीर का आराम तो चलो हम जमीन पर सोयेंगे। ये नहीं मेरा मतलब, मेरा मतलब ये नहीं था। मतलब यह है किहमें यह सोचना चाहिए कि हमें अब आत्मा का कार्य करना है। आत्मा को संतोष में रखना है। जितना हम शारीरिक चीजों के बारे में सोचेंगे उतनी ही हमारी आत्मा दुःखी हो जाती है, उतना ही उसका प्रकाश कम हो जाता है। और जितना ही हम बाहर के लोगों के लिये, दूसरे लोगों के लिए वातावरण के लिए सोचेंगे उतने ही हम बढ़ते जायेंगे। आत्मा का प्रकाश बढ़ता जायेगा। उसमें आपको हैरानी होगी कि आप अपने को पाइयेगा कि आप बिल्कुल विश्व के एक नागरिक हो गये। आपके अंदर विश्व जैसे समा गया। अब बहुत से लोग मुझको कहते हैं कि माँ आप को हरेक चीज कैसे याद रहती है। जैसे अब इसको देख लिया, बस देख लिया बस हो गया चित्र सा बन गया। सब चीज, आप लोग चित्र से मेरे हृदय में है। ये कैसे होता है, क्योंकि मैं अपने अंदर हूँ ही नहीं। सब बाहर ही हैं। मैं सोचती भी नहीं अपने बारे में, कुछ विचार ही नहीं करती। वो करने की मेरे अंदर शक्ति ही नहीं, तरीका ही नहीं कि अपने बारे में सोचती बैठी रहूँ। कभी नहीं, मेरे साथ किसने क्या किया, मेरे साथ किसने ज्यादा की, कभी नहीं, हो गया सो हो गया। लेकिन जो कुछ भी ब्राह्म में है। इसमें जब आप अपनी आत्मा का प्रकाश देखेंगे तब आप में विश्व की पूर्ण कल्पना हो जायेगी। कोई पहाड़ी है वहाँ चले गये, पहाड़ी में भी अपनी आत्मा का प्रकाश देख सकेंगे। हर एक चीज में जब आप आत्मा का प्रकाश देखते हैं, हर एक चीज में आपको कोई चीज भूलती नहीं, उसका आनंद भूलता नहीं। पर उसके बारे में फिर नहीं लगती कि ये किसका कालीन है, मार लो, इसको खरीद लें। सिर्फ देखना मात्र बनता है और जब देखना मात्र प्रगल्भ होता जाता है, बढ़ता जाता है, बढ़ता जाता है तो आपका व्यक्तित्व एक विश्व को भर लेता है और यही स्थिति अब आप सब में आनी चाहिए।

और भिन्नता तो चाहिए हरेक चीज में। इसमें कोई शक नहीं। हर एक आदमी में भिन्नता होनी चाहिए। पर किस चीज में अपना-अपना आनंद व्यक्त करने में। कल देखिये डांस कर रहे थे लोग, जैसा भी आ रहा था, जिस तरह से भी आ रहा था। सब की भिन्नता थी। एक जैसे कोई भी नहीं नाच रहा था ये भिन्नता हमारे अंदर है। अगर रहे तो उससे हम अलग-अलग तरह के आनंद का अनुभव दूसरों को दे सकते हैं आनंद अपने लिए नहीं। हम दूसरों को कितना आराम दे सकते हैं। दूसरों को हम कितना आनंद दे सकते हैं। हम दूसरों में कितना प्रकाश ला सकते हैं इसका विचार हमेशा रहना चाहिए। कभी-कभी मैं नहीं कहती, पर कभी-कभी हिन्दुस्तानी भी लिखते हैं कि माँ मेरी प्रगति कराइये। मैं चाहता हूँ कि मैं इन चीजों से हटकरके, ऊँचा उठ जाऊँ। क्योंकि जो भी चिट्ठी लिखते हैं वह अधिकतर बेकार की चीजें, ये बीमार है वो बीमार है। ऐसा है वैसा है। और कोई-कोई बहुत प्यारी चिट्ठियाँ लिखते हैं और उससे मैं बिल्कुल गद्गद हो जाती हूँ कि इन्होंने अपना मार्ग ढूँढ़ लिया है इन्होंने देख लिया है इन्हें कहाँ जाना है। अपनी मॉजल को इन्होंने पहचान लिया है। बस इससे ज्यादा मुझे कुछ नहीं चाहिए कि मैं देखती रहूँ और उसको आत्मसात करती रहूँ। पर चाहत ऐसी नहीं है किसी चीज की जो कि आप कह सकते हैं, क्योंकि जो चीज हमेशा बढ़ रही है, क्षितिज के जैसे, Horizon के जैसे उसके लिए आप कैसे कह सकते हैं कि आपकी क्या चाहत है? आपका जीवन इसी तरह से अत्यंत सुन्दर हो जाए, अत्यंत सुगन्धित और सबको आह्लाद देने वाला, सबको आनंद देने वाला हो जाये, यही मैं चाहती हूँ। आप लोग कभी-कभी राजकारण भी करते हैं कुछ करते हैं, इसकी जरूरत नहीं। सहजयोग में आपको पैसा कमाना नहीं। कोई पदवी लेनी नहीं, कुछ नहीं। इसमें आपको अपनी प्रतिष्ठा ही पानी है। जिस प्रतिष्ठा में आप एक विश्व के जानने वाले, विश्व में उतरने वाले, विश्व की परवाह करने वाले, उनकी तकलीफ और परेशानियों को दूर करने वाले और सबको ज्ञान देने वाले, ऐसे महान-महान पुरुष हो सकते हैं और मेरा यही आशीर्वाद है कि सब लोग इसी तरह से अपने को बढ़ायें, अपनी ओर नजर करके देखिये कि क्या मैं इस तरह से हूँ?

परमात्मा .आपको आशीर्वादित करे।

ORIGINAL TRANSCRIPT

ENGLISH TALK

I am sorry I had to speak in Hindi language because the majority of the people know, understand Hindi. In the western civilization, suddenly I find people have taken to a very licentious, vulgar, despicable life. I can't believe how can they be so stupid and idiotic. It seems they have no wisdom even to see that this is stupidity.

Thank God, you have achieved this Self-Realization, you got the Light, you are so transformed, you look so beautiful. And that you have given up all those funny ideas of freedom. It's so clear cut. This must be, I don't know what to say, that in those western countries, to find out people who have such wise understanding of pure love and respect for your own purity. As if suddenly you have come out of that darkness and have bathed in the light of the divine. It's not possible otherwise. See the history of the western countries is they never had very great kings, you know. One king in England, killed seven wives, you know. If you, (Shri Mataji Corrects herself) In India if one wife was killed he would have been killed, first of all, before he killed the second one. So, one sees that, despite all that kind of a history and that kind of a vulgarity that has been going on for days together and now it is the worst after war.

Suddenly you people have come up like lotuses and have made those countries so fragrant and so beautiful. But now they are afraid because they believe in licentiousness, they believe in vulgarity. They think it is their freedom, so they do attack, but you are not to be bothered because you have achieved something that is real, that is for eternal life. They supposed to be Christians, Jews and also Muslims there. Among all of them I am surprised to see how they have interpreted these three great religions, in the most contradictory way. For Christ has said that if you make any sin with your eyes, commit some sins, then remove your eyes, yourself. If one hand does anything wrong, you cut that hand. I have never seen anybody without an eye or without a hand in the whole of this Christian kingdoms, nowhere. They can cut other's, but their own eyes I have never seen. It is very difficult to be a Christian, I tell you, because this is an impossible situation. For that, we can say that it, this was for angels, must be, for the fallen angels that you take out your eye and cut your hand. And then Mohammed Sahib has said, he thought that why only the men are handled by Christ. So he says no no, not that you cut it, but let others cut your hand and take out your eyes. And for women it is so- that they should be buried in the Mother Earth half way and should be stoned. Think of American women, what would have happened to them? So, very difficult to follow Islam also. Impossible.

They were very great people, very pure and they thought that this is the only way people can be kept pure. No, on the contrary with all these thing - compulsion they become extremely immoral. This suppression doesn't help. And then also, this they call it one that is Islamic laws – Sharia, was actually given by Moses to Jews. You can find it out in the Bible. It was given by Moses to Jews and the Jews would not accept it because they were sensible to say, we can't accept this much, too much. So that was taken over by Mohammed Sahib, better put it for these people. But with all this doing, people become extremely immoral, extremely quarrelsome and go to the other side and such an imbalance is created. But after Self-Realisation, the Sahaja culture is born within you. With the Sahaja culture you come into balance and people are surprised at the western Sahaja Yogis, that Mother how have you made their eyes so pure? How can they get rid of these bad habits of looking at every woman or every man? What have you done to their eyes? How have they become so pure? It is the light of your own spirit, which is shining through your eyes. It's very important.

Again, I would say, that the women in the west have to understand what is Sahaja Yoga. Not dominating anyone. Here the women are dominated, not always but to great extent. And there what

you find that women are dominating. Firstly they believe in divorce and they try to harass people with that. This domination, may be we can say comes from their upbringing. But Sahaja Yoga should change completely your ideas, and there should be no domination but a complete understanding about which I have told you many a times and explained to you.

Still I must say I am overwhelmed by the response. And on behalf of the divine power, I would like to thank you very much. It is really a new race that has come up, really. Somewhere, somebody goes wrong or something happens. Doesn't matter. On the whole it's such a beautiful race of people. I face them before me. Even in dreams people could not have believed it. They don't yet believe. But it has happened, you must now have an enlightened faith, which we call as 'Shraddha'. With that enlightened faith I am sure you will adhere to the emancipation of human beings. It's your duty now. It is all given free. Of course, Sahaja Yoga is free. You can have it free; you don't have to pay anything, all right. But, you have to give to others. That is very important. It is free to you and you cannot keep it to yourself. If you keep it to yourself, you can never be happy, you can never be joyous. So you have to be absolutely collective and then you will see how it works out. Very surprising in all the European countries, in America, South America, Australia, Japan, Hong Kong, Taiwan, Kuala Lumpur, everywhere. I have seen people have become collective and they told me Mother, there is no greater joy than seeing people getting Self-Realization. That is the greatest joy one has. And this is what, one has to have in your mind. Of course there are some people who start criticizing Sahaja Yoga - why this, why that? All nonsense. But actually if you see, everybody who is a deep Sahaja Yogi wants that Sahaja Yoga should spread in their own countries and then to see that it is accepted all over the world. It is such a wisdom, which has come into their mind.

Otherwise, one fellow told me, "Mother, I was only worried about my own house, my family, motorcar and this and that. Now forgotten all that. Now, I am only worried how I will be able to give this joy to others. I cannot be happy alone. And that's what it has happened." And I am very thankful to you, for all of you, who have come here all the way to celebrate my birthday. And this is just your love and affection for me, and I also love you very much.

May God bless you.

Today's Puja is going to be bit short. Because I don't know what, ah, in my birthday which deity's Puja you are doing. Where there are all deities, all of them are there. So it has to be short, with all of them being worshipped together, it works out much faster, I think. As when you, all of you are together, things work out much faster.